संपादकीय,

भारत अनेक जातियों, जनजातियों, धर्म ग्रंथों तथा सांस्कृतिक संप्रदायों का देश है। जाति व्यवस्था भारतीय सामाजिक व्यवस्था का प्राण तत्व है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।यह जनजातियां भारत के विभिन्न स्थानों में निवास करती हैं। नगर से दूर वन प्रदेशों और बीहड़ जंगलों में प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने वाली आदिम जनजातियां वातावरण में पुष्पित और पल्लवित होती हैं। यह आदिवासी भी कहलाते हैं। यह आदिवासी प्रकृति प्रेमी होते हैं तथा आज के वैज्ञानिक युग में भी प्राकृतिक जीवन जीना पसंद करते हैं। सदियों से पिछड़ी आदिम जनजातियां आधुनिकता की दौड़ से बहुत दूर है। इन जनजातियों का सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ राजनीतिक विकास भी आवश्यक हो गया है। राजनीतिक रूप से इन जनजातियों के आधुनिक समाज से जुड़ने के लिए समय-समय पर अनेक संवैधानिक प्रावधान एवं कदम उठाए गए हैं। अनुसूचित जनजातियों के हितों की अधिक प्रभावी तरीके से रक्षा हो इसके लिए 2003 में 89 वे संवैधानिक संशोधन के द्वारा प्रथक राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की स्थापना की गई।

“भारत की जनजातियां- विविध आयाम” इस विषय को “नवज्योत” अन्तर्राष्ट्रीय अंतर्विध्याशाखीय संशोधन पत्रिका द्वारा यथोचित न्याय देने का प्रयास इस अंक में किया गया हैI भारत की जनजातियां और उनकी परंपरा और समस्यांओं को इस अंक के माध्यमसे उजागर करके शासन, समाज और लोगोंके सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया गया हैI भारत में निवास करने वाली विभिन्न जनजातियों से संबंधित विभिन्न सामग्री को पाठकों तक पहुंचाने के उद्देश्य और आशा के साथ एक छोटा सा प्रयास है।

सादर

डॉ. शालिनी गुप्ता,
एम.ए., पीएच.डी., सेट, नेट, बी.एड.,एम.एड.
सहायक प्राध्यापक, इतिहास.
शासकीय गणेश शंकर विद्यार्थी महाविद्यालय,
मुंगावली. जिला- अशोकनगर, मध्य प्रदेश.